Hindi Honours. V paper.

1. "कर्मभूमि" के नामकरण की सार्थकता पर विचार :-

X 2011

(i) मानवजीवन का चित्र —
(ii) मुसीबतों से विचलित न होना —
(iii) कर्त्तव्य के प्रति लगन —
(iv) समाज के लिए त्याग —
(v) आदर्श प्रेम —
(vi) कर्म का महत्व —
(vii) भौतिक संसाधन के प्रति उदासीन —
(viii) अपने आप पर निर्भरता — (स्वयं)

2. कर्मभूमि की समस्या के सार्थकता पर विचार :-
(i) वर्चस्ववादी समाज — ✓
(ii) पूँजीपति का आधिपत्य — ✓
(iii) किसानों का शोषण — ✓
(iv) छूआछूत की भावना — ✓
(v) ब्राह्मणों का विशेषाधिकार — ✓
(vi) जीवन का संदेश — ✓

3. कर्मभूमि में सकीना के बलिदान एवं त्याग -
(i) आदर्श (दिव्य) प्रेम — ✓
(ii) समर्पण की भावना — ✓
(iii) अटूट विश्वास — ✓
(iv) समाज एवं परिवार के लिए त्याग — ✓
(v) आदर्श प्रेमिका की भावना — ✓
(vi) कर्म की प्रधानता — ✓

सत्यम कुमार

8. कर्मभूमि में अमरकांत के बलिदान का वर्णन-
(i) अभाव में विद्यार्थी जीवन-
(ii) बचपन से ही संघर्ष शुरू-
(iii) पिता की सम्पति से लालच नहीं-
(iv) समाज के लिए त्याग-
(v) प्रेम का महत्व-
(vi) आदर्श प्रेमी के रूप में फर्ज-
(vii) व्यवहार में निपुनता-
(viii) अटूट धोती का बलिदान-

कर्मभूमि में सलीम का त्याग-

9. कर्मभूमि में सुखदा के बलिदान का वर्णन-
(i) व्यवहारिक दुनिया से अभिभूत-
(ii) सुख-शांति की भावना-
(iii) समाज के लिए कुर्बानी-
(iv) प्रेम की भावना-
(v) जीवन का लक्ष्य-
(vi) भारतीय नारी की विशेषता-

Scanned with CamScanner

" व्याख्या "

"जब मैं झोपड़ी में गया तब
मेरा हृदय काँप उठा,
मानों दरिद्रता छाती पीट-पीट
कर रो रही है"

उद्धरण — प्रस्तुत व्याख्येय पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक "कर्मभूमि" से उद्धृत है। इसके लेखक मुंशी प्रेमचन्द जी हैं। ~~यहाँ भारत के~~ इस पंक्ति में गरीबी को दर्शाए हैं।

कविपरिचय — मुंशी प्रेम चन्द जी का जन्म वाराणसी से छः मील दूर लमही गांव में हुआ था। 20वी सदी का भारतीय जीवन परतंत्रता की आड़ में कुसंस्कृति करुण चित्कार कर रहा था जब ऐसे मार्गदर्शक सत्य साहित्य के सृष्टा की आवश्यकता थी मुंशी प्रेमचन्द जी ने अवनति के गर्त में गिरते हुए भारतीय समाज को सम्बल दिया। इन्होंने किसान, मजदूर, दलित-पिछड़ा, समाज में पूँजीवाद का वर्चस्व आदि को अपना केन्द्र मानकर कहानी और उपन्यास का सृजन किये हैं।

प्रसंग — यह व्याख्येय पंक्ति उस समय का है जब अमरकांत अपना गांव छोड़कर काशी के झोपड़ी में रहने गया था। अशिक्षा वहाँ परिव्याप्त थी। गरीबी का असली स्वरूप दिख रहा था। उसी समय अमरकांत के द्वारा मुंशी प्रेम चन्द जी यह पंक्ति उद्घोषित किये थे।

संदर्भ —